08 April, 2008.

ज्योतिष और फिल्म जगत

साउथ का सूर्य

नाम : - रजनीकाँत
जन्म तारिख :- १२ दिसंबर, १९५०
जन्म समय :- २३ : ५० रात्रि
जन्म स्थान :- कर्नाटक

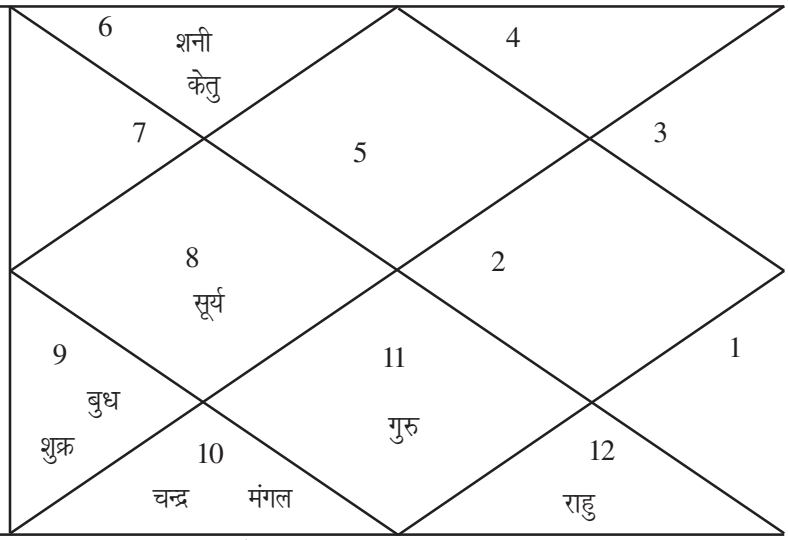

ग्रहयोग इंसान को क्या से क्या बना देते हैं, ये हमे दक्षिण के सुपर स्टार रजनीकाँत की कुण्डली से देखने को मिलता हैं । ऐक बस कण्डक्टर से दक्षिण की फिल्मों का सुपर स्टार बन जाना, ग्रहो के चमत्कार से ही संभव हैं । उनके प्रशंसक उनकी पुजा करते हैं । किसी जिवित इंसान के लिये ये प्रसिध्दी और प्रशंसा की चरम सीमा हैं । नब्बे के दशक में फिल्मो से धन अर्जित करने वाले अभिनेताओं में रजनीकाँत, अधिकतम कमाई करने वाले अभिनेता भी माने जाते थे ।

कला और सुन्दरता के कारक दो ग्रह बुध और शुक्र, फिल्मों के कारक भी माने जाते हैं । रजनीकाँत की कुण्डली में ये पंचम भाव में धनु राशि में विराजमान हैं । धनु राशि का स्वामी गुरु सप्तम भाव में बैठा हैं और लग्न पर दृष्टि बनाये हुऐ हैं । अब गुरु एसे ही लग्न पर दृष्टि बनाये तो राजयोग के समान फल देता हैं । उसपर उसकी राशि में बुध और शुक्र बैठे होने के कारण गुरु इनके प्रभाव भी लग्न पर डाल रहा हैं । इसे कहते हैं अधिष्ठित ग्रहों का फल । अब एसे भी फिल्मों में सफलता के लिये पंचम भाव का फल विशेष सफलता दिलाता हैं, और गुरु पंचम भाव का स्वामी भी हैं । तो एसे में गुरु रजनीकाँत की सफलता का एक विशेष फलप्रद ग्रह हैं । इस तरह १९८३ से १९९९ तक चली गुरु महादशा ने दक्षिण की फिल्मों में रजनीकाँत का डंका बजवा दिया और वो वंहा के सफलतम अभिनेताओं में गिने जाने लगे ।

रजनीकाँत का वास्तविक नाम 'शिवाजी राव गायकवाड़' हैं । उनका पारिवारिक नाम 'बाबा' हैं । १२ दिसंबर, १९५० को कर्नाटक में जन्में रजनीकाँत मराठी परिवार से हैं । लेकिन हिन्दी, मराठी, तमिल और अंग्रेजी फर्राटे से बोलते हैं । शादीशुदा रजनीकाँत की पत्नी का नाम लत्था हैं और एश्वर्या और सौन्दर्या उनकी दो बेटियों के नाम हैं । जिसमें से बड़ी बेटी एश्वर्या का विवाह तमिल फिल्मों के अभिनेता 'धनुष' से हुआ हैं । अपने संघर्ष भरे समय में रजनीकाँत कभी बस कण्डक्टर हुआ करते थे । ये राहु की महादशा का समय था, जो उनकी कुण्डली में अष्टम भाव में हैं और उनसे संघर्ष करवा रहा था ।

बहरहाल अपने टिकिट देने के अंदाज और बस रोकने के लिये सिटी बजाने के स्टायल से वे अपने रुट पर बड़े चर्चित थे और लोग उन्हे एक्टर कहा करते थे । इसी मानसिकता के चलते एक दिन वे तमिल फिल्मों के मशहूर निर्देशक 'के बालचंदर' से मिलने पहुंच गये । 'के बालचंदर' उस १९७५ जमाने में तमिल फिल्मों के लिये नये चेहरों की तलाश में रहा करते थे । इधर रजनीकाँत के जीवन में गुरु महादशा का आरंभ होने वाला था और उधर 'के बालचंदर' नये चेहरे को तलाश रहे थे । दोनो के संगम ने एक सुपर स्टार को जन्म दिया और रजनीकाँत देखते ही देखते दक्षिण के अमिताभ बच्चन कहलाने लगे ।

राहु की महादशा के दौरान १९७४ में बुध की अंतर्दशा चल रही थी । तब फिल्मों से आकर्षित रजनीकाँत ने फिल्मी इंस्टीटयूट से एक्टींग का कोर्स पुर्ण किया । १९७५ में 'के बालचंदर' ने उन्हे अपनी फिल्म 'अपूर्वा रागांगल' में एक छोटा सा रोल दिया । फिर राहु महादशा में शुक्र की अंतर्दशा चली और रजनीकाँत को और फिल्में मिलने लगी । हालाकि अपनी आरंभिक फिल्मों में रजनीकाँत ने खलनायक के रोल अधिक किये थे । परन्तु जैसे ही राहु महादशा में सूर्य की अंतर्दशा आरंभ हुई और सूर्य ने राहु के सारे कुचक्रों को तोड़ दिया और फिल्म 'भुवन ओरु केलविक्कुरी' में उन्हौने पहला सकारात्मक रोल किया ।

रजनीकाँत की प्रसिध्दी और जनसाधारण में उनकी अति लोकप्रियता में उनकी कुण्डली में चतुर्थ में बैठे सूर्य का बड़ा प्रभाव हैं । सूर्य एसे भी प्रसिध्दी का कारक माना जाता हैं । दूसरे सूर्य, लग्न का भी स्वामी हैं जो अपने आप में नैसर्गिक रुप से प्रसिध्दी देने का फल करता हैं । अब यही सूर्य जनता के भाव चतुर्थ में जा बैठा हैं । जनसाधारण में लोकप्रियता चतुर्थ भाव से ही मिलती हैं । राजनितिकों की कुण्डलियों में चतुर्थ भाव अक्सर बलवान हुआ करता हैं । एसे में जब १९८० में राहु में सूर्य की अंतर्दशा चली तो रजनीकाँत के जीवन में प्रसिध्दी और लोकप्रियता की गंगा बह निकली । फिर आगे १९८३ से आने वाली गुरु महादशा ने सोलह वर्षो तक तो इन सब शुभ फलों के रिकार्ड ही तोड़ दिये ।

इसी गुरु महादशा के दौरान उन्हौने हिन्दी फिल्मों में भी काम किया और 'अन्धा कानून, गिरफ्तार, चालबाज और गंगवा' जैसी हिट फिल्मों

Andha Kannon , Giraftarr, Chal Baaz , Gangwa

में अपना नाम दर्ज करवाया । इसके अलावा कन्नड़, बंगाली, मलयालम और १९८८ में हॉलीवुड की 'ब्लड स्टोन' नामक फिल्म में भी रजनीकाँत ने काम किया । रजनीकाँत को 'पदम भूषण' नामक अर्वाड से भी सम्मानित किया जा चुका हैं । 'एशियावीक' नामक पत्रिका ने उन्हे दक्षिण का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति घोषित किया था । सन् २००७ में उनकी नवीनतम फिल्म हैं, 'शिवाजी-दी बॉस' ।

रजनीकाँत की अपार प्रसिध्दी ने उन्हे राजनिति के लिये भी प्रेरित किया था । १९९६ में उन्हौने DMK - TMC के गंठबंधन को सहयोग किया और उस समय की सत्ताधारी पार्टी AIADMK को हराने में सफल हुऐ । परन्तु आने वाले चुनावों में वे चुनाव जीत ना सके और आगे उनका सहयोग ना हो सका । वर्ष २००६ में उन्हौने किसी भी पार्टी को समर्थन अथवा सहयोग देने से सार्वजनिक रुप से इन्कार कर दिया । राजनिति में उनका मन नही लगा । इसका कारण भी कुण्डली में मौजूद हैं । शनी राजनिति का कारक ग्रह माना जाता हैं और राहु अतिरिक्त बुध्दी का कारक माना जाता हैं । राजनिति के लिये इनका बलवान होना आवश्यक हैं । परन्तु रजनीकाँत की कुण्डली में ये दोनो ही ग्रह निर्बल हैं । वैसे भी रजनीकाँत की कुण्डली गुरु जैसे सात्विक ग्रह से प्रभावित हैं । जिसके फलस्वरुप रजनीकाँत सत्य और रचनात्मकता के हिमायती हैं । जबकि राजनिति साम, दाम, दण्ड और भेद निति से चलती हैं । जिसमें अच्छे-बुरे का कोई भेद नही होता हैं । इसिलिये रजनीकाँत का मन राजनिति से खटटा हो गया लगता हैं ।

बहरहाल वर्तमान में रजनीकाँत शनी महादशा में ही चल रहे हैं । २०१२ तक उनके लिये इसमें कारक ग्रहो की दशाऐं चलेगी उसके बाद शनी में राहु की अंतर्दशा उनके लिये कुछ अशुभ सिध्द हो सकती हैं । इस विश्लेषण से हम कह सकते हैं कि रजनीकाँत २०१२ तक फिल्मों में अपना योगदान देते रहेगें । कुण्डली के शुभ ग्रहों सूर्य और गुरु के कारण उनकी प्रसिध्दी और लोकप्रियता सदा कायम रहेगी और आने वाले लंबे समय तक लोग उनको याद रखने वाले हैं ।

अपनी उम्र के साठ के दशक में रजनीकाँत हीरो का रोल करते हैं । ये उनके उपर ईश्वर की कृपा ही हैं और उनकी योगों से भरी कुण्डली का कमाल हैं कि वे यश, मान-सम्मान और धन का भरपुर उपभोग करते हैं । हालाकि वे कहते हैं कि इस उम्र में भी उनकी एसी एनर्जी का राज उनका 'डेली मेडिटेशन' हैं । हालाकि वे ये भी कहते हैं कि इस दुनियाँ में सर्वाधिक प्रसन्नचित व्यक्तित्व हैं, बच्चे, पागल और ऋषि-मुनि । ये शायद उनका जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण हैं अथवा तो उनका अनुभव हैं । जो भी हो, प्रत्येक मनुष्य की यंहा अपनी एक कहानी हैं । बहरहाल रजनीकाँत के लिये हमारी शुभ कामनाऐं हैं कि वे सदा जवान बने रहे और जनसाधारण को अपने अभिनय से आनंदित करते रहे ।